ॐ नमो नारायणाय ।। अथ कथा प्रसंगः = एकदा मुनयाः सर्वे सर्वलोक हिते
रताः सुरम्ये नैमिषारण्ये गोष्ठीं चक्रु मनोरमाम् तदन्तरे महातेजः व्यास
शिष्यो महायशः सूतः शिष्य गणैः युक्तः समायातो हरिं स्मरन
तमायान्तं समालोक्य सूतं शास्त्रार्थ पारगम् मुनिं सर्वे समुत्तस्थुः शौनकाद्याः
तपोधनाः =

१ ॴकि दुह ॴकि क्या शारीय ऋषि सॉरिय लोकन हन्दि हित कार
खातर नैमिषारण्य नाव सॅम्यिस जंगलस मंज़, समित कॅरुख, लजिय
सभा करनि - तथ्य मुकस प्यय बडि तेज सूस व्यास मुनीश्वर सुन्द, चाठ
सूत पौराणिक चाठ वहान भगवान सुन्द नाव सरान सरान तथ समाजि
मंज क्या वाचयाव -

तमिस सूत पौराणिकस यववनिस सु श्रोसना शारिसय शास्त्रकिस
अर्थस पारगस शौनकादिक तपस्वन सॅत्य मुनीश्वर क्या खुद
वुसाथिय +

वराहते महाबुद्धि सैदते मुनि सत्तमैः उवास सदसो मध्ये सर्वै ऋषिगणै वृतः॥ तत्रोपविष्टं तं सूतं शौनको मुनि सत्तमः बद्धाञ्जलिरिमां वाचं उवाच विनयान्वितः

तवपत क्या ङोस तिमय मुनीश्वरव त[illegible]स सूतपौराणिकस बोतमुन उत्तम आसन तया आसनस च्वं क्या चारव सान बेहेयाव। तय उत्तम आसन स च्वं बूढिमतिस सूतपौराणिकस क्या लाज्जोव शौनक मुनीश्वर क्या लाज्जोस अंजली धारिय ई वाली बन्नति–।

शौनकः– महर्षे सूत सर्वज्ञ कलिकाले समागते कलौ सर्वे भविष्यन्ति पापकर्म परायणः वेद विद्याविहीनाश्च तेषां श्रेयः कथं भवेत्॥

हे बडि मुनीश्वर सूत पौराणिक सानिसय जानवनि कलिकाल यलि आमुन आहि तय कलिकालस मंज आसन सारीपि मनुष्य ~~मनुष्य~~ पाप कर्मस न्याक्षे लागि मनि वेदनि विद्याय रहित आहन् नेष्यन् मनुष्यन् कल्याण किथ कान बनि॥

कालौ अन्नगतः प्राणः लोकाः स्वल्पायुषस्तथा निर्धनाश्च भविष्यन्ति
नानापीडा प्रपीडिताः = प्रयास साध्यं सुकृतं शास्त्रेषु प्रथितं द्विज
तस्मान्न कोऽपि सुकृतं करिष्यति कलौ जनः = सुकृतेषु विनष्टेषु
प्रवृत्ते पापकर्मणि सर्वशः विलयं सर्वे गमिष्यन्ति दुराचाराः =

कलियुगस मंज आसन प्राण अन्नस मंज गामित लोक आसन
कमय आय सस्त्यि बेयि आसन स्यठा निर्धन नाना प्रकारि
पीडायव आसन पीडा दितिमत - हे सूतजी शास्त्रन मंज
छु ना उनमुत पुण्य योस आसवान छा सका कु स्यठा
मेहनत करिथ बनान तमि किन्य क्या कलियुगस मंज
काह ति क्या करि न पुण्य - पुण्य यलि नाश आसन
गामति पाप आसि प्रवर्तनस मंज आसन सारेय दुष्ट क्या
गछन तमि पाप कर्म किन्य नाश -

स्वल्पे श्रमे अल्पवित्ते अल्पकाले सुसत्तम यथा भवेत् 4
महापुण्यं तथा कथय सूतजः =

हे सूतजी कमय मिहनत्च किन्य कमय धन किन्य
कमय समय किन्य यस्य पाठि स्यठा पुण्य बनिहि
तिथ पाठि बः प्रष्टि बनता =

पापोपदेशतः पुण्यं पापं वा कुरुते जनः सतद्भागी भवेत्
मार्त्यः इति शास्त्रेषु निर्णयः = पुण्योपदेशी सदयः कैत
वस्तुविवर्जितः पापायच विरोधीच चत्वारः केशवोपमः ::
हे सूतजी यमिस पुण्युक उपदेश कुरमुत आसि
उपदेश आसिस कुरमुत हं मनुष्य क्या छु नामिक हिसादर
बनान् य क्या छु शास्त्रुक निश्चय

बिपि क्या पुण्यस उपदेश्या करन वालु दयावान् बिपि
क्या कपरस मनुष्य बिपि पापस विरोध करन
वालु मनुष्य यमवार मनुष्य क्या छि भगवानस
भरोबर ग्रासवान = =

ज्ञानं संप्राप्य संसारे यः परेभ्यो न यच्छति ज्ञान रूपी
हरि तस्मै प्रसन्न इव नेक्षते - ज्ञानश्रेष्ठ स्वर तस्य पर संतोष
कृन्नर: स ज्ञेय: सर्व सम्पूरणी नर रूप धरो हरि =

संसारस मंज ज्ञान प्राविथ योस बियन उपदेश्य करि न तमिस
मनुष्यस क्या छान भगवान प्रसन्न पछि वुछान
ज्ञानस्ते न बियिस्त बियिस मनुष्यं संतोष करवुन मनुष्य क्या
छि नर रूप दारवुन भगवान् नोतु

व्रतेन तपसा किं वा प्राप्यते वांछितं फलं तत्सर्वं श्रोतु
मिच्छामि कथयस्व महामते - त्वमेव मुनि शार्दूल वेद
वेदांग पारग: त्वत्तो नहि वक्तान्यो यतस्त्वं व्यास
शिक्षित: ॥ ॥

हे हून जी व्रत त तप किन्य क्या कांछि मुत फल
प्रावान छि ति सोरुय छि ख्वाशि बुजुन हुछान
हे उत्तम ऋषि च छुख नो वेदस त वेद कथ मन्य
अंगन पारंगा मुत चि बोगर य हकिन का हत्ति वनी थ
यमि किनि च व्यास मुनी सुन्द हिख्यि नाव मुत छुक

सूत: धन्योसि त्वं मुनिश्रेष्ठ त्वमेव वैष्णवाग्रणी:
यत: समस्त लोकानां हित मिच्छसि सर्वदा =
श्रृणु शौनक वक्ष्यामि यत्कथाश्रान्त मिष्यते नारदे
नैव संप्रुत: भगवान्कमला पति: सुवर्षये यथैवाह
तच्छृणु त्वं समाहित: = इति श्रीसत्यनारायणकथायां प्रथमाध्याय:

सूतजी लगास वर्णनि हे उत्तम ऋषि च शौनका स्यठ
भाग्यवान् च क्या छुक वैष्णवव् मंज प्रधान
यमि कारण किन्य च सार्विनय लोकन हुन्द हित कार छुहन
छुक हे शौनक यथि मुँजनच यछा छुय तिका च मुज
नारद मुनी प्रारन ति क्या प्रस यछय कथ भगवानस
प्रछमाच·

प्रस कथ भगवानन नारद जी
यस वनिमाव प्रस हकथ को
म बरव॥

सूत: एकदा नारदो योगी नरानुग्रह वाञ्छया पर्यटन् विवि 8
धान् लोकान् मर्त्य लोक मुपागत: तत्र दृष्ट्वा जना: सर्वे नाना
दु:ख समान्विता: नाना योनि समुत्पन्ना: क्लिश्यमानान् स्वकर्मभि:
केनोपायेन चैतेषां दु:खनाशो भवेद्ध्रुवं इति संचिन्त्य मनसा विष्णु
लोकं गतस्तदा ॥ ॥
सूत जी क्या लोक ऋषिन् को वनति - शौनकादिह ग्युकि क्या
नारद मुनीश्वर लोकन हेजि ग्ननुग्रह कि इच्छा द् किन्य
स्वहान् लोकन फेरान् फेरान् क्या मनुष्य लोकस
मंज क्या वाचायाव तति क्या वुछुन सारिय मनुष्य
नाना प्रकारि दु:खव सुसि नाना प्रकारि योनियव नेह्य

पद गामति पनन्यव पनन्यव कर्मव केच्य क्या प्रास
तेम कष लभान [illegible] नारद मुनी श्रुरन क्या सोच
मनस मंज इमन मनुष्यन किथकन नच्छि दुःख
दूर यीथि सोचिथ क्या गयोक नारद जी विष्णु
लोकस मंज — = = =

तत्र नारायणं देवं शुक्लवर्णं चतुर्भुजम्। शङ्ख चक्रधरं देवं वन
माला विभूषितम्। दृष्ट्वा तं देव देवेशं स्तोतुं समुप चक्रमे
नारदः। याति क्या नारद जी विष्णु लोकस मंज वुछन
न[illegible]ति क्या उहुन भगवान सफेद रंग चुरव भुजव सुत्य
शंख चक्र गदा धारवुन वनमाला शोभरावुन

उपिस भगवानस वहित कथा लुग नारद जी भगवा
नस तुना करनि = = = = = =

नारद: नमस्ते वाङ्मनोतीत रूपायानन्तशक्तये । आद्य मध्यान्त
हीनाय निर्गुणाय गुणात्मने सर्वेषां आदि भूताय भक्तानां
आर्ति नाशिने ॥ श्रुत्वा स्तोत्रं ततो विष्णु नारदं प्रत्यभाषत

नारद जी हु भगवानहि कुन वचन हे वाणी न मनस
उलगिय गामनि भगवान हे अन्त रहित शक्ति शालि
हे आद्य मध्य न अन्त रहित हे भगवान हे सारिनय
आद्य भनिभति हे भक्तन हरिया तकलीफस दूर
करवनि ईठ तुना नारद मुनी स्तुर संज भोजिय
भगवान् लुग नारद जीयस कोन वननि = =

श्रीभगवान्. किमर्थं आगतोऽसि त्वं किं ते मनसि वर्तते
कथयस्व महाभाग तत्सर्वं कथयामि ते - ॥

श्रीभगवान कहलो नारद जीयह कोन कनति है। नारद जी
वक्तव्य बादत होय, आमुन बोलत मनहुमेज कहा प्रभिलाष
होह तेकना तमुक जवाब कहाब कनय वे -

नारदः - मर्त्यलोके जनाः सर्वे नाना शोक समन्विताः नाना
योनि समुत्पन्नाः पच्यन्ते पापकर्मभिः तत्कथं शमयेन्नाथ ल
घूपायेन तद्वद श्रोतुमिच्छामि तत्सर्वं कृपास्ति यदि ते मयि.

हे भगवान मनुष्य लोकहमें जन्मल्हि सभी मनुष्य नाना प्रकारि
दुःख सहति नाना प्रकारि योनिमे जन्म पापकर्मति पचनिव
पचनिव पापकर्मक किमा कहल्हि उपर भोगाब हे सुख किय
कन कमित्लुति उपाय द्वारा निमन हुएलहि निकया हार ब
सेहुन इन्हुक अनुसार तहि मय ... कृपा करेब -

श्रीभगवान् साधु पृष्टं त्वया वत्स लोकानुग्रह काङ्क्षया यत्कृत्वा मुच्यते मोहात् तच्छृणुष्व वदामि ते - व्रतमस्ति महापुण्यं सर्वेषां भुवि दुर्लभम् तव स्नेहान्मया विप्र प्रकाशः क्रियतेऽधुना - सत्यनारायणस्यैव व्रतं सम्यग्विधानतः कृत्वा सद्यः सुखं भुक्त्वा परत्र मोक्ष माप्नुयात् - तच्छ्रुत्वा भगवद्वाक्यं नारदः पुनरब्रवीत् -

हे साधि नारद जी लोकन हन्दि अनुग्रह कि इछाय खातर क्या प्रछुय चि [illegible] कथ योस व्रत करिथ लोक मोह निशि मुकलान छा व्रत क्या चि मबना [illegible] - कृपा करि क्या छु बड पवित्र होय क्या छु पृथिवी प्यठ स्वर्ग दुर्लभ [illegible] च्यानि इछुवात कोनि क्या छुस बु सो व्रत जाहिर करान् योस सत्य नारायण व्रत नाव पठि करान सत्य क्या [illegible] मनुष्य यथ जन्मस सुख भोगिथ पर लोकस क्या छु मुक्ति लभान् दपान् यि भगवान सुन्द वाक्य बोजिथ क्या लोगि नारद जी [illegible] व्यादि भगवानस कोन वनानि -

किं फलं किं विधानं च कृतं केनच तद्व्रतम् तत्सर्वं विस्तरा 
ब्रूहि कदा कार्यं हित व्रतम्

हे भगवान तस्य व्रतक फल क्या छ तथा विधि क्या छ
सो व्रत कस्ले कुरस्ता ते सो सब विस्तार पूर्वक वर्णन
विधि करनाहु सो व्रत क्या केरान

श्रीभगवान् दुःखशोकादि शमनं धनधान्य विवर्धनम् सौभाग्य
सन्तति करं सर्वत्र विजय प्रदम् यस्मिन् कस्मिन् दिने मर्त्यो भक्ति
श्रद्धा समन्वितः सत्यनारायणं देवं यजेच्चैव निशामुखे बान्धवै
ब्राह्मणैश्चैव सहितो धर्मतत्परः नैवेद्यं भक्तितो दद्यात् सपादं
भक्ष्य मुत्तमम् रम्भाफलं घृतं क्षीरं घृतं क्षीरं गोधूमस्य च चूर्णकम्
अभावे शालि चूर्णं वा शर्करं वा गुडं तथा सपादं सर्व भक्ष्याणि
~~एकादं सर्व भक्ष्याणि~~ एकीकृत्य निवेदयेत् विप्राय दक्षिणां
दत्वा कथां श्रुत्वा जनैः सह ततश्च बन्धुभिः सार्धं विप्रेभ्यः

प्रतिपादयेत् प्रसादं भक्षयेत् भक्त्या नृत्यगीतादिकं चरेत् - 14
ततश्च स्वगृहं गच्छेत् सत्यनारायणं स्मरन् एवं कृत्वा मनुष्या
णां वाञ्छा सिद्धि भवेद्ध्रुवम् -

भगवान् क्या है नारद जी यह कौन बनाए है नारद जी यह
क्या य बन है य क्या है [illegible] पाकर [illegible] बोल
भक्त न [illegible] बड़रावन बोल [illegible] करन बोल
[illegible] क्या है [illegible] करन बोल - [illegible]
[illegible] नारायण [illegible]
[illegible] क्या [illegible] ब्राह्मण [illegible]
[illegible] क्या [illegible] कौन [illegible] क्या [illegible]
[illegible]
[illegible] क्या [illegible] पाकर [illegible]
[illegible] क्या [illegible] क्या [illegible]

श्रीभगवानु काशीपुरे पुरा कश्चिद्-आसीत् विप्रोति निर्धनः
क्षुधातृष्णाकुलो भूत्वा नित्यं बभ्राम भूतले दुःखितं ब्राह्मणं
दृष्ट्वा भगवान् ब्राह्मणप्रियः वृद्धब्राह्मणरूपेण पप्रच्छ द्विज
मादरात् किमर्थं भ्रमसे विप्र महीं कृत्स्नां सुदुःखितः तत्सर्वं
श्रोतुमिच्छामि कथ्यतां यदि रोचते —

भगवान कथा लाग्या नारद जीयस कोन वनानि- हे नारद जी
काशी हन्दिस नगरस मंज क्याःओस पतकालि ब्राह्मनाःएक
स्यठा गरीब बुछि त त्राप्ति किन्य क्याःओस व्याकुल बन्यमत

क्या ब्रोस पृथ्वी पाठ फेरानु कृपानु यथिस दुःखी ब्राह्मण
स वद्धिन क्यपथ भगवान् ब्रोसना ब्राह्मणान तुन्द स्यठ
रोठ तमि क्या लोग बोड ब्राह्मणन लुग क्या प्रमीस
गरीब ब्राह्मणस प्रछुनि - हे [illegible] वृद्ध ब्राह्मन च
क्याज़ि छुक स्यठा दुःखी बनिथ पृथ्वी पाठ फेरान
तेवनत च पनुन सारोय हाल अगर चे छुहान ह्यय -

विप्र: ब्राह्मणोऽति दरिद्रोऽहं भिक्षार्थं संभ्रमे महीम् उपायं
यदि जानासि कृपया कथय प्रभो

गरीब ब्राह्मणन क्या लोग भगवानस कोन वननि - हे भगवान
भक्या छुस स्यठा गरीब भिक्षाय खातर क्या छुस पृथ्वी
पाठ फेरान अगर च केंह उपाय जानान छुक हे भगवान
कृपा करेथ वनत -

वृद्धः सत्यनारायणो देवो वाञ्छितार्थफलप्रदः तस्य त्वं द्विज
शार्दूल कुरुष्व व्रतमुत्तमम् — यत्कृत्वा सर्वदुःखेभ्यो मुक्तो
भवति मानवः विधानं च व्रतस्यापि विप्रायाभाष्य यत्नतः
सत्यनारायणो वृद्धः तत्रैवान्तरधीयत

वृद्धब्राह्मणन् कथा लोग गरीब ब्राह्मणस कोन वनानि- हे उत्तम
ब्राह्मण सत्यनारायणोक व्रत भाङ्कुय काङ्क्षितस फलस
देवोन यास व्रत करिथ हमा मनुष्य सारिवय दुःखव
निश्च हो मुकलान इथय पाठिन अमिस ब्राह्मणस सत्य
नारायणन विधि वनिथ कथ वृद्ध ब्राह्मणन कया नपोव
ततीयःपुनर ध्यानस मंज-

ततः प्रातः करिष्यामि व्रतं मनसि निश्चितं इति सञ्चिन्त्य विप्रो
सो रात्रौ निद्रां न लब्धवान् ततः प्रातः समुत्थाय सत्यना

शयन व्रतम् करिष्ये इति संकल्प भिक्षार्थं समागमत् द्विजः 

तस्मिन्नेव दिने विप्रः प्रचुरं द्रव्यमाप्तवान् तेनैव बन्धुभिः

सार्धं सत्यस्य व्रतमाचरत् सर्वदुःख विनिर्मुक्तः सर्व सम्पत्

समन्वितः बभूव स द्विज श्रेष्ठो व्रतस्यास्य प्रसादतः

ततः प्रभृति कालं च मासि मासि व्रतं कृतम् -

तव धन क्या कुह गरीब ब्राह्मनन मनस मंज निश्चय कि

प्रभात कालस क्या करम सत्यनारायणया व्रत येय सोंचान

सोंचान क्या, याचस न निडय तव धन यलि प्रभात काल

स निर्धरि वृथ सत्यनारायणया व्रत मनस मंज निश्चय करिय

क्याय क्या द्राव भिक्षाय नमिकुह क्या बन्याव ब्राह्मनस

प्राप्त धन — तव धन क्या, पुनीन सादेय बान्धव केरान क्या

सत्यनारायणया व्रत सारिवेय दुःखेय निपुा मुक्त जुयाव

सारिवय सम्पदा यव सत हो उत्तम ब्राह्मोन करन पश्च करन १९
लजोव व्रत करनि

श्रीभगवानू एवं नारायणस्येदं व्रतं कृत्वा द्विजोत्तमः सर्व
पापविनिर्मुक्तः दुर्लभं मोक्ष माप्नुयः - ~~सर्व पाप विनिर्मुक्तो~~
व्रतं चेदं यदा विप्रः पृथिव्यां संचरिष्यति तदैव सर्व दुःखं च
मनुष्यस्य विनष्यति -

भगवान कया लेगा नारद जीयाह कोन वनति यथय पठि
नारायण सोन्द व्रत करिथ नसि उत्तम ब्राह्मणन दुर्लभ मोक्ष
कया प्राकोन्ह नगर यथय पठि मनुष्य पृथिवी पाठ नारा
यन सोनु व्रत सत्यनारायण करन नेलि कया गहि मनु
ष्यन सोहयु दुःख दूर - इति श्री स्कन्द पुराणे सत्य
नारायण कथायां तृतीयोध्याय: -

सूतः एवं नारायणेनोक्तं नारदाय महात्मने मयापि 20

कथितं विप्राः किमन्यत्कथयामि ते (शौनकः)

सूत पौराणिक लोग कहलन कोन ननि यथय पाठिन

क्याशेस भगवानन नारद जीयसे वोनमुत यस कथ

कयामि तुहय वनिमव ·

शौनकः ततो विप्र वत्तं केन पृथिव्यां चरितं मुने तत्सर्वं

श्रोतुमिच्छामि श्रद्धास्माकं प्रजायते

शौनक मुनीवर लोग सूत जीयसे कोन वननि हे सूतजी

तवपन सो ब्राह्मण सन्द बत पृथिवी प्यठ कमि करोव

न सोहय बुजन ख्वातर छु ग्रस्य श्रद्धा पद गछान

सूतः शृणुध्वं मुनयः सर्वे व्रतं येनकृतं भुवि एकदा

स द्विजवरो निजवित्तानुसारिभिः बन्धुभिः स्वजनैः
सार्धं व्रतं कर्तुं समुद्यतः एतस्मिन्नेव काले तु काष्ठक्रेता
समागतः बहिः काष्ठं च संस्थाप्य विप्रस्य मन्दिरं ययौ।
क्षुधया पीडितात्मा स विप्रं दृष्ट्वा तथाविधं प्रणिपत्य
द्विजं प्राह किमिदं क्रियते त्वया कृते किं फलमाप्नोति
विस्तराद्वद मे प्रभो

हतजी, क्या छु वनान ब्राह्मिन कोन बोजिव भा सारीय
ऋष्य तव पत कसि छुय सत्यनारायणोक व्रत करु मोन
॰ पकिरह युक्ति क्याँ॰ प्रास छु उत्तम ब्राह्मोन पननिन
बान्धवन सान व्रत करान तथ्य मुकस प्यठ क्या॰ आव
॰ यक जेनि वुल जेनि बुर क्या थवान निबर कनि ब्राह्मन
सन्दिस गरस मंज क्याचाव युक्ति क्या॰ प्रस मिस

स्पठा लजिमच य बाह्मण क्या व होन बजन करान्
परन घ्यष्ठ क्या लगोस वनानि हे ब्राह्मन च क्या
हुकय करानू य करन हून्य क्या फल हि प्रावानू
ने सोहय बनन भ्य विस्तार पूर्वक —